

आधुनिक युग में उपेक्षित है बुजुर्ग कारण एवं निदान

एस. आर. कन्नौजे
सहायक प्राध्यापक,
प्राणीविज्ञान विभाग,
शासकीय शिवनाथ विज्ञान
महाविद्यालय
राजनांदगांव (छ.ग.)

सारांश

वृद्धावस्था जीवन की वह अवस्था है, जिसमें शरीर कमजोर व अशक्त हो जाता है तथा दूसरों की सहायता व मदद् चाहता है, इस अवस्था में व्यक्ति परिजनों का अपनापन व उनका प्यार चाहता है, लेकिन दुर्भाग्य से उसे परिजनो से उपेक्षा मिलती है, जिसके बारे मे वह सोच भी नहीं सकता, क्योंकि जिन हाथों से उसने अपने बच्चों को चलना सिखाया, उनकी हर सुख-सुविधा का ध्यान रखा, जीवन के इस पड़ाव में उसके वही बच्चें उनका ध्यान रखना तो दूर उनसे ठीक से बात करना भी पसंद नहीं करते। इस उम्र में शरीर की प्रतिरोधक क्षमता थोड़ी कम हो जाती है, इसलिये वृद्धावस्था में अधिकांश लोग अपने परिवार के अन्य लोगों पर निर्भर हो जाते हैं, ऐसे लोग जल्दी रोगग्रस्त हो जाते हैं। कई घरों में देखते हैं कि उम्र बढ़ने के साथ-साथ अक्सर लोग बुजुर्गों की उपेक्षा करने लगते हैं, उपेक्षा के शिकार होने पर ये बुजुर्ग कई तरह की मानसिक बीमारियों से ग्रसित हाने लगते हैं। आज की युवा पीढ़ी में बुजुर्गों के प्रति असंवेदनशीलता इतनी बढ़ गई है कि इस उम्र में उनकी मदद् करना तो दूर, वे उन्हें और श्रम करने एवं पैसा कमा कर देने के लिये मजबूर करने में शर्मिंदगी भी महसूस नहीं करते।

मुख्य शब्द : वृद्धजन, जीविकोपार्जन, नगरीकरण, भौतिकवाद, व्यक्तिवाद, वृद्धाश्रम, सरकार, योजनाएँ

प्रस्तावना

वृद्धावस्था जीवन का आखिरी पड़ाव है, इस बात का एहसास आज के युवाओं को होना ही चाहिये, क्योंकि किसी भी दिन उन्हें इस स्थिति का सामना करना है। जो परिस्थिति आज वो अपने माता पिता को दे रहे हैं कल उनके बच्चे भी उनके साथ वैसा ही बरताव कर सकते हैं और न भी करे तो भी उनके द्वारा माता-पिता के प्रति किये गये बुरे व्यवहार को उनके कर्म कभी क्षमा नहीं करेंगे और समय आने पर उन्हें दंडित करेंगे। माता-पिता तो भगवान की तरह होते हैं जिनकी सेवा करो तो ढेरो आर्शीवाद मिलते हैं और जीवन सफल बनता है। बुजुर्गों और बहुबेटों में सामन्जस्य न हो पाने की एक वजह पश्चिमी सभ्यता का बढ़ता प्रभाव व रुढ़िवादिता भी है। पश्चिम का अंधानुकरण बड़े बुजुर्गों को नहीं भाता और बहु बेटों को बुजुर्गों का उनकी जिंदगी में यह दखल अच्छा नहीं लगता।

रिसर्च एंड एडवोकेसी सेंटर ऑफ एजवेल फाउन्डेशन के एक सर्वे में खुलासा हुआ की हमारी युवा पीढ़ी न केवल वरिष्ठजनों के प्रति लापरवाह है बल्कि उनकी समस्याओं के प्रति संवेदनहीन भी हैं। सर्वे के अनुसार 59.3: लोगो का मानना है कि समाज व घर में बुजुर्गों के साथ व्यवहार में विरोधाभास है, केवल 14: लोगो का मानना है कि घर-बाहर दोनो जगह बुजुर्गों की हालत में कोई अंतर नहीं है, जबकि 25: यह मानते

Anthology : The Research

है कि घर में बुजुर्गों का सम्मान समाप्त हो गया है। हमारे देश में माता-पिता अपने बेटे-बेटियों की शिकायत करने की मानसिकता बिल्कुल नहीं रखते और इसलिए उनके अमानवीय बरताव को सहते चले जाते हैं, कुछ लोग इसी का अनुचित लाभ उठाते हैं साथ ही उनके साथ दुर्य्यहार करने से भी नहीं चुकते। वृद्धावस्था में मिलने वाले कष्टों के कारण कुछ लोग इस अवस्था को जीवन का अभिशाप मानते हैं। इस अवस्था तक आते-आते अंग प्रत्यंग शिथिल पड़ जाते हैं और जिंदगी दूसरों की कृपा दया पर निर्भर हो जाती है। व्यक्ति इस अवस्था में मानसिक तनावों से ग्रस्त हो जाता है, उसके स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ जाता है और याददास्त कमजोर हो जाती है।

वृद्धावस्था संसार के सभी देशों में एक त्रासदी की तरह है, भारत में यह स्थिति बहुत ही पीड़ादायक है इसका एक कारण यह है कि हमारा समाज जिन पारिवारिक मूल्यों पर स्थापित था, उसका विघटन होते हुए आज प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है। वे माँ-बाप अपने को उस समय और भी अकेला पाते हैं, जब उसके बच्चे नौकरी की तलाश में अन्यत्र पलायन कर जाते हैं और चाहते हुये भी अपने वृद्ध और कमजोर माँ-बाप को कोई सुरक्षा नहीं दे पाते। आज की युवा पीढ़ी बुजुर्गों से छुटकारा पा लेना चाहती है क्योंकि वह उन्हें बोझ और अपनी ऐशो आराम भरी जिंदगी की सबसे बड़ी बाधा मानती है। ऐसे संवेदनहीन बच्चों को यह एहसास ही नहीं होता कि वे उन्हीं माता-पिता के कारण इस सुख-सुविधा से भरी जिंदगी को जी पा रहे हैं। बुजुर्गों को यह भान भी नहीं था कि समय बदलने के साथ लोग भी बदल जायेंगे, उनकी जिंदगी का सहारा उनसे दूर हो जायेगा।

बुजुर्गों को अपनी परम्परायें, निर्णय, विचार सही लगते हैं, आज की परिस्थिति में होने वाले बदलाव को अच्छा नहीं मानते, लेकिन उनकी संताने नए परिवर्तनों को फैशन मानती है, दोनों पीढ़ियों के बीच पनपती दूरीयाँ खाईयों में बदल जाती है। बुजुर्गों में तरह तरह की शारीरिक व मानसिक बीमारियों के बढ़ने का मुख्य कारण संयुक्त परिवार का टूटना और एकल परिवार में हुई वृद्धि है। पारिवारिक विघटन के कारण बुजुर्ग अकेले पड़ जाते हैं, ऐसे में वृद्धावस्था के रोगों से ग्रसित हो जाते हैं। यू.एन.ओ. की रिपोर्ट के अनुसार 20 साल बाद भारत दुनिया के सबसे बुजुर्ग लोगों का देश होगा इसका कारण यह है कि हमारे

देश में रहने वाले लोगों की प्रतिरोधक क्षमता पहले की तुलना में कम होती जा रही है जिसके कारण उम्र बढ़ने के साथ-साथ जल्दी वृद्धावस्था आ जाती है।

वृद्धजनों को दी जा रही सुविधायें

1. वृद्धजनों को जो सुविधा दिया जा रहा है उनमें प्रमुख है – वृद्धावस्था पेंशन योजना – यह उन्हें दिया जाता है जिनकी आमदनी का कोई नियमित स्रोत नहीं होता, इसका लाभ 53 लाख बुजुर्ग उठा रहे हैं।
2. कई राज्य सरकारें वृद्धावस्था पेंशन योजना चला रही हैं, इसमें केन्द्र सरकार से पेंशन नहीं मिलने वाले बुजुर्गों को पेंशन दी जाती है।
3. बेसहारा बुजुर्गों को अन्नपूर्णा योजना के तहत प्रतिमाह 10 किलो खाद्यान्न दिया जाता है, जिन्हे पेंशन नहीं मिल रही है उन्हें यह दिया जाता है।
4. बुजुर्ग नागरिकों को आयकर अधिनियम में आयकर में छूट दी जाती है।
5. भारतीय जीवन बीमा निगम, स्बद्ध अपनी बचत योजनाओं के माध्यम से वरिष्ठ नागरिकों को सुविधायें उपलब्ध कराता है।
6. भारतीय रेलवे वरिष्ठ नागरिकों (65 वर्ष से अधिक उम्र) को सभी श्रेणियों के किरायों में 30% की छूट देती है।
7. इंडियन एयर लाइन्स 65 वर्ष के अधिक उम्र के सभी बुजुर्गों को सभी घरेलू उड़ानों में किरायों में 50% की छूट देती है।

प्रमुख कारण

1. बुजुर्गों के प्रति उपेक्षा व तिरस्कार
2. युवावर्ग का अपना स्वार्थीपन
3. बुजुर्गों के साथ अनुचित आचरण व व्यवहार
4. लगातार संयुक्त परिवार का बिखराव
5. एकल परिवार में वृद्धि
6. बुजुर्गों में प्रतिरोधक क्षमता में कमी

निदान

1. आज की सबसे बड़ी आवश्यकता मनुष्य को स्वार्थ की संकीर्णताओं से परे जाकर मानवता सिखाने की है।
2. देश की युवा पीढ़ी बुजुर्गों के प्रति सहानुभुति बरतें, उपेक्षा व तिरस्कार की भावना से ऊपर उठकर कार्य करें।

Anthology : The Research

3. बुजुर्गों के स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होना युवा पीढ़ी का कर्तव्य है, स्वास्थ्य के देखरेख हेतु परिजनो की जागरूकता जरूरी है।
4. बुजुर्गों की देखरेख अंदर व बाहर एक समान हो, उनके साथ भेदभाव पूर्ण व्यवहार न हो।
5. अपनै बड़ों/परिजनों का आदर व सम्मान करें , उन्हें अपनापन दे।
6. मनुष्य तन से नहीं, मन से समय पूर्व बूढ़ा हो जाता है, उन्हे अच्छे विचारों सें सुसज्जित कर सकते है।
7. बुजुर्गों सें ऐसा बर्ताव करें कि उनके चेहरे पर सदा प्रसन्नता कें भाव दिखें।
8. बुजुर्गों को घर/परिवार का स्थायी आधार स्तंभ माने, क्योकि वे परिवार की धुरी होते है।
9. जीवन में माता-पिता की सेवा को सर्वोच्च प्राथमिकता दें।
10. युवा पीढ़ी माता-पिता/बुजुर्गों की आवश्यकता व सुरक्षा का ध्यान रखें।

निष्कर्ष

यदि युवा पीढ़ी अपने बुजुर्गों की देखरेख नहीं करेंगी तो उन्हें भी वृद्धावस्था की शुरुआत से ही उन परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है, जो उनके बुजुर्गों को करना पड़ रहा है। माता-पिता की सेवा करना, ध्यान रखना, उनके अनुभवों को सीखना, उन्हे सम्मान देना, अच्छा बर्ताव करना चाहिये, यह कार्य करके युवा पीढ़ी अपनै आपकों धन्य कर सकते है, उन्हे जहाँ तक हो सके अपनापन दे। हर परिवार के समर्थ व सक्षम लोग बुजुर्गों की देखरेख करें, उन्हे स्वस्थ व प्रसन्न रखने में सहयोग करें, बुजुर्ग भी देश के विकास मे भागीदार बन सकते है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. समाजशास्त्र – 2012, प्रो. एम. एल. गुप्ता एवं डॉ. डी. डी. शर्मा – साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा.
2. अखण्ड ज्योति मासिक पत्रिका, माह अगस्त 2014 व नवम्बर 2014, अखण्ड ज्योति संस्थान, धीयामंडी, मथुरा (उ.प्र.) से प्रकाशित।